तित्थयर

वर्ष २२ अंक-६ सितम्बर १९९८

जैन भवन

'जिसे तुम मारना चाहते हो वह तुम ही हो।'

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard De-oiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur-261001 (U.P.)
Ph : 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph : 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta-700 001
Ph : 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
Fax : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

जैन भवन
कलकत्ता

वर्ष - २२ अंक - ६, सितम्बर १९९८

संपादन
लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Tithayar**, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary, Jain Bhawan, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US $ 20.00,
for three years : 160.00, US $ 60.00.
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US $ 160.00.

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007 and Printed by her
at Surana Printing Works, 205 Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007, Phone : 239-4393

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	जैन धर्म का प्राचीन इतिहास	डा° हीरालाल जैन	११७
२.	श्रावक जीवन	आचार्यश्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी	१२७
३.	राजा सम्प्रति	--	१३७

आवरण चित्र-पाकबिरा से ७वीं से १०वीं शताब्दी की प्राप्त जैन मूर्तिया एवं मन्दिर ।

Composed by
COMPU LASER GRAPHICS, 9, Srimani Ghat Lane, Rishra-712248, Hooghly.

सयं तिवायए पाणे, अदुवऽन्नेहिं घायए।
हणन्तं वाऽणुजाणाइ, वेरं वड्ढइ अप्पणो ॥३॥

-(सूत्र° श्रु° १ अ° १ उ° १ गा° ३)

जो मनुष्य प्राणियों की स्वयं हिंसा करता है, दूसरों से हिंसा करवाता है और हिंसा करनेवालों का अनुमोदन करता है, वह संसार में अपने लिए वैर को ही बढ़ाता है।

जैन धर्म का प्राचीन इतिहास

डा हीरालाल जैन

जैन पुराणों में भारतवर्ष का इतिहास उसके भौगोलिक वर्णन के साथ पाया जाता है। भारत जम्बूदीप के दक्षिणी भाग में स्थित है। इसके उत्तर में हिमवान् पर्वत है और मध्य में विजयार्द्ध पर्वत। पश्चिम में हिमवान् से निकली हुई सिन्ध नदी बहती है और पूर्व में गंगानदी, जिससे उत्तरभारत के तीन विभाग हो जाते हैं। दक्षिण भारत के भी पूर्व, मध्य और पश्चिम दिशाओं में तीन विभाग हैं। ये ही भारत के छह खंड हैं, जिन्हें विजय करके कोई सम्राट् चक्रवर्ती की उपाधि प्राप्त करता है।

भारत का इतिहास देश की उस काल की अवस्था के वर्णन से प्रारम्भ होता है, जब आधुनिक नागरिक सभ्यता का विकास नहीं हुआ था। उस समय भूमि घास और सघन वृक्षों से भरी हुई थी। सिंह, व्याघ्र, हाथी, गाय, भैंस, आदि सभी पशु वनों में पाए जाते थे। मनुष्य ग्राम व नगरों में नहीं बसते थे, और कौटुम्बिक व्यवस्था भी कुछ नहीं थी। उस समय न लोग खेती करना जानते थे, न पशुपालन, न अन्य कोई उद्योग-धन्धे। वे अपने खान, पान, शरीराच्छादन आदि की आवश्यकताएं वृक्षों से ही पूरी कर लेते थे। इसीलिए उस काल के वृक्षों को कल्पवृक्ष कहा गया हैं। कल्पवृक्ष अर्थात् ऐसे वृक्ष जो मनुष्यों की सब इच्छाओं की पूर्त्ति कर सकें। भाई-बहन ही पति-पत्नी रूप से रहने लगते थे, और माता-पिता अपने ऊपर सन्तान का कोई उत्तरदायित्व अनुभव नहीं करते थे। इस काल में धर्म-साधना, पुण्य-पाप की भावना आदि कोई विचार विवेक नहीं थे। इस परिस्थिति को पुराणकारों ने भोगभूमि-व्यवस्था कहा है, क्योंकि उसमें आगे आनेवाली कर्मभूमि सम्बन्धी कृषि और उद्योग आदि की व्यवस्थाओं का अभाव था।

क्रमशः उक्त अवस्था में परिवर्त्तन हुआ, और उस युग का प्रारम्भ हुआ जिसे पुराणकारों ने कर्म-भूमि का युग कहा है व जिसे हम आधुनिक सभ्यता का प्रारम्भ कह सकते हैं। इस युग को विकास में लाने वाले चौदह महापुरूष माने गए हैं, जिन्हें कुल कर या मनु कहा है। इन्होंने क्रमशः

अपने अपने काल में लोगों को हिंस्र पशुओं से अपनी रक्षा करने के उपाय बताए। भूमि व वृक्षों के वैयाक्तिक स्वामित्व की सीमाएं निर्धारित की। हाथी आदि वन्य पशुओं का पालन कर, उन्हें वाहन के उपयोग में लाना सिखाया। बाल बच्चों के लालन-पालन व उनके नामकरण आदि का उपदेश दिया। शीत तुषार आदि से अपनी रक्षा करना सिखाया। नदियों को नौकाओं द्वारा पार करना, पहाड़ों पर सीढ़ियां बनाकर चढ़ना, वर्षा से छत्रादिक धारण कर अपनी रक्षा करना आदि सिखाया। और अन्त में कृषि द्वारा अन्न उत्पन्न करने की कला सिखाई, जिसके पश्चात् वाणिज्य, शिल्प आदि वे सब कलाएं व उद्योगधन्धे उत्पन्न हुए जिनके कारण यह भूमि कर्मभूमि कहलाने लगी।

चौहद कुलकरों के पश्चात् जिन महापुरूषों ने कर्मभूमि की सभ्यता के युग में धर्मोपदेश व अपने चारित्र द्वारा अच्छे बुरे का भेद सिखाया, ऐसे त्रेसठ महापुरूष हुए, जो शलाका पुरूष अर्थात् विशेष गणनीय पुरूष माने गए हैं, और उन्हीं का चरित्र जैन पुराणों में विशेष रूप से वर्णित पाया जाता है। इन त्रेसठ शलाका पुरूषों में चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ बलभद्र, नौ नारायण और नौ प्रति-नारायण सम्मिलित हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं :-

२४ तीर्थंकर :- १. ऋषभ, २. अजित, ३. संभव, ४. अभिनंदन, ५. सुमति, ६. पद्मप्रभ, ७. सुपार्श्व, ८. चन्द्रप्रभ, ९. पुष्पदंत, १०. शीतल, ११. श्रेयांस, १२. वासुपूज्य, १३. विमल, १४. अनन्त, १५. धर्म, १६. शान्ति, १७. कुन्थु, १८. अरह, १९. मल्लि, २०. मुनिसुव्रत, २१. नमि, २२. नेमि, २३. पार्श्वनाथ, २४. वर्धमान अथवा महावीर।

१२ चक्रवर्ती :- २५. भरत, २६. सगर, २७. मघवा, २८. सनतकुमार, २९. शान्ति, ३०. कुन्थु, ३१. अरह, ३२. सुभौम, ३३. पद्म, ३४. हरिषेण, ३५. जयसेन, ३६. ब्रह्मदत्त।

९ बलभद्र :- ३७. अचल, ३८. विजय, ३९. भद्र, ४०. सुप्रभ, ४१. सुदर्शन, ४२. आनन्द, ४३. नन्दन, ४४. पद्म, ४५. राम।

९ वासुदेव :- ४६. त्रिपृष्ठ, ४७. द्विपृष्ठ, ४८. स्वयम्भू, ४९. पुरूषोत्तम, ५०. पुरूषसिंह, ५१. पुरूषपुण्डरीक, ५२. दत्त, ५३. नारायण, ५४. कृष्णा।

९ प्रति-वासुदेव :- ५५. अश्वग्रीव, ५६. तारक, ५७. मेरक, ५८. मधु, ५९. निशुम्भ, ६०. बलि, ६१. प्रहलाद, ६२. रावण, ६३. जरासंघ।

आदि तीर्थंकर और वातरशना मुनि-

इन त्रेसठ शलाका पुरूषों में सबसे प्रथम जैनियों के आदि तीर्थंकर ऋषभनाथ हैं, जिनसे जैनधर्म का प्रारम्भ माना जाता है। उनका जन्म उक्त चौदह कुलकरों में से अन्तिम कुलकर नाभिराज और उनकी पत्नी मरूदेवी से हुआ था। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् वे राजसिंहासन पर बैठे और उन्होंने कृषि, असि, मसि, शिल्प, वाणिज्य और विद्या इन छह आजीविका के साधनों की विशेष रूप से व्यवस्था की, तथा देश व नगरों एवं वर्ण व जातियों आदि का सुविभाजन किया। इनके दो पुत्र भरत और बाहुबलि, तथा दो पुत्रियां ब्राह्मी और सुन्दरी थी, जिन्हें उन्होंने समस्त कलाएं व विद्याएं सिखलाई। एकदिन राज्य सभा में नीलांजना नाम की नर्तकी की नृत्य करते करते ही मृत्यु हो गई। इस दुर्घटना से ऋषभदेव को संसार से वैराग्य हो गया, और वे राज्य का परित्याग कर तपस्या करने वन को चले गए। उनके ज्येष्ठ पुत्र भरत राजा हुए, और उन्होंने अपने दिग्विजय द्वारा सर्वप्रथम चक्रवर्ती पद प्राप्त किया। उनके लघु भ्राता बाहुबलि भी विरक्त होकर तपस्या में प्रवृत्त हो गए।

जैन पुराणों में ऋषभदेव के जीवन व तपस्या का तथा केवलज्ञान प्राप्त कर धर्मोपदेश का विस्तृत वर्णन पाया जाता है। जैनी इसी काल से अपने धर्म की उत्पत्ति मानते हैं। ऋषभदेव के काल का अनुमान लगाना कठिन है। उनके काल की दूरी का वर्णन जैन पुराण सागरों के प्रमाण से करते हैं। सौभाग्य से ऋषभदेव का जीवन चरित्र जैन साहित्य में ही नहीं, किन्तु वैदिक साहित्य में भी पाया जाता है। भागवत पुराण के पांचवें स्कंध के प्रथम छह अध्यायों में ऋषभदेव के वंश, जीवन व तपश्चरण का वृतान्त वर्णित हैं, जो सभी मुख्य मुख्य बातों में जैन पुराणों से मिलता है। उनके माता-पिता के नाम नाभि और मरूदेवी पाए जाते हैं, तथा उन्हें स्वयंभू मनु से पांचवी पीढ़ी में इस क्रम से हुए कहा गया है– स्वयंभू मनु, प्रियव्रत, अग्नीध्र, नाभि और ऋषभ। उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत को राज्य देकर सन्यास ग्रहण किया।

भागवत पुराण में यह भी कहा गया है कि ऋषभदेव के इस चरित्र को सुनकर कोंक, बैंक व कुटक का राजा अर्हन् कलयुग में अपनी इच्छा से उसी धर्म का संप्रवर्त्तन करेगा इत्यादि। इस वर्णन से इसमें कोई सन्देह नहीं रह

जाता कि भागवत पुराण का तात्पर्य जैन पुराणों के ऋषभ तीर्थंकर से ही है, और अर्हन् राजा द्वारा प्रवर्तित धर्म का अभिप्राय जैन धर्म से । अतः यह आवश्यक हो जाता है कि भागवत पुराण तथा वैदिक परम्परा के अन्य प्राचीन ग्रंथों में ऋषभदेव के संबंध की बातों की कुछ गहराई से जांच पड़ताल की जाय ।

भागवतपुराण में कहा गया है कि –

"**वर्हिषि तस्मिन्नेव विष्णुदत्त भगवान् परमर्षिभिः प्रसादितो नाभः प्रियचिकीर्षया तदवरोधायने मेरूदेव्यां धर्मान् दशंयितुकामो बातरशनानां श्रमणानाम् ऋषीणाम् ऊर्ध्वमन्थिनां शुक्लया तन्वावततार ।**" (भा. पु. ५, ३, २०)

"यज्ञ में परम ऋषियों द्वारा प्रसन्न किए जाने पर, हे विष्णुदत्त, पारीक्षित, स्वयं श्री भगवान् (विष्णु) महाराज नाभि का प्रिय करने के लिए उनके रनिवास में महारानी मेरूदेवी के गर्भ में आए । उन्होंने इस पवित्र शरीर का अवतार वातरशना श्रमण ऋषियों के धर्मो को प्रकट करने की इच्छा से ग्रहण किया ।"

भागवत पुराण के इस कथन में दो बातें विशेष ध्यान देने योग्य हैं, क्योंकि उनका भगवान् ऋषभदेव के भारतीय संस्कृति में स्थान तथा उनकी प्राचीनता और साहित्यिक परंपरा से बड़ा घनिष्ठ और महत्वपूर्ण संबंध है। एक तो यह कि ऋषभदेव की मान्यता और पूज्यता के संबंध में जैन और हिन्दुओं के बीच कोई मतभेद नहीं है । जैसे वे जैनियों के आदि तीर्थंकर हैं, उसी प्रकार वे हिन्दुओं के लिए साक्षात् भगवान विष्णु के अवतार हैं । उनके ईश्वरावतार होने की मान्यता प्राचीनकाल में इतनी बद्धमूल हो गई थी कि शिवमहापुराण में भी उन्हें शिव के अट्ठाइस योगावतारों में गिनाया गया है (शिवमहापुराण, ७, २, ९) । दूसरी बात यह कि प्राचीनता में यह अवतार राम और कृष्ण के अवतारों से भी पूर्व का माना गया है । इस अवतार का जो हेतु भागवत पुराण में बतलाया गया है उससे श्रमण धर्म की परंपरा भारतीय साहित्य के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद से निःसन्देह रूप से जुड़ जाती है । ऋषभावतार का हेतु वातरशना श्रमण ऋषियों के धर्म को प्रकट करना बतलाया गया है । भागवत पूराण में यह भी कहा गया कि -

"अयमवतारो रजसोपप्लुत-कैवल्योपशिक्षणार्थः" (भा. पू. ५, ६, १२)

अर्थात् भगवान् का यह अवतार रजोगुण से भरे हुए लोगों को कैवल्य की शिक्षा देने के लिए हुआ। किन्तु उक्त वाक्य का यह अर्थ भी संभव है कि यह अवतार रज से उपप्लुत अर्थात् रजोधारण (मल धारण) वृत्ति द्वारा कैवल्य प्राप्ति की शिक्षा देने के लिए हुआ था। जैन मुनियों के आचार में अस्नान, अदन्तधावन, मल परीषह आदि द्वारा रजोधारण संयम का आवश्यक अंग माना गया है। बुद्ध के समय में भी रजोजल्लिक श्रमण विद्यमान थे। बुद्ध भगवान् ने श्रमणों की आचार-प्रणाली में व्यवस्था लाते हुए एकबार कहा था–

"नाहं भिक्खवे संघाटिकस्य संघाटिधारएमत्तेन सामञ्ञं वदामि, अचेलकस्स अचेलकमत्तेन रजोजल्लिकस्य रजोजल्लिकमत्तेन...जटिलकस्स जटाधारणमत्तेन सामञ्ञं वदामि।" (मज्झिमनिकाय ४०)

अर्थात्–हे भिक्षुओ, मैं संघाटिक के संघाटी धारणामात्र से श्रामण्य नहीं कहता, अचेलक के अचेलकत्वमात्र से, रजोजल्लिक के रजोजल्लिकत्व मात्र से और जटिलक के जटाधारण-मात्र से भी श्रामण्य नहीं कहता।

अब प्रश्न यह होता है कि जिन वातरशना मुनियों के धर्मो की स्थापना करने तथा रजोजल्लिक वृत्ति द्वारा कैवल्य की प्राप्ति सिखलाने के लिए भगवान् ऋषभदेव का अवतार हुआ था, वे कब से भारतीय साहित्य में उल्लिखित पाए जाते हैं। इसके लिए जब हम भारत के प्राचीनतम ग्रन्थ वेदों को देखते हैं, तो हमें वहाँ भी वातरशना मुनियों का उल्लेख अनेक स्थलों में दिखाई देता है।

ऋग्वेद की वातरशना मुनियों के संबंध की ऋचाओं में उन मुनियों की साधनाएँ ध्यान देने योग्य हैं। एक सुक्त की कुछ ऋचायें देखिए–

मुनियो वातरशनाः पिशंगा वसते मला।
वातस्यानु ध्राजि यन्ति यद्देवासो अविक्षत॥
उन्मदिता मौनेयेन वातां आतस्थिमा दयम्।
शरीरेदस्माकं यूयं मर्तासो अभि पश्यथ॥

(ऋग्वेद १०, १३६, २-३)

विद्वानों के नाना प्रयत्न होने पर भी अभी तक वेदों का निसन्देह रूप से अर्थ बैठाना संभव नहीं हो सका है। तथापि सायण भाष्य की सहायता

से मैं उक्त ऋचाओं का अर्थ इसप्रकार करता हूं:– अतीन्द्रियार्थदर्शी वातरशना मुनि मल धारण करते हैं, जिससे वे पिंगल वर्ण दिखाई देते हैं। जव वे वायु की गति को प्राणोंपासना द्वारा धारण कर लेते हैं, अर्थात् रोक लेते हैं, तब वे अपनी तप की महिमा मे दीप्यमान होकर देवता स्वरूप को प्राप्त हो जाते हैं। सर्व लौकिक व्यवहार को छोड़कर हम मौनवृत्ति से उन्मत्तवत् (उत्कृष्ट आनन्द सहित) वायु भाव के (अशरीरी ध्यानवृत्ति) को प्राप्त होते हैं, और तुम साधारण मनुष्य हमारे बाहय शरीर मात्र को देख पाते हो, हमारे सच्चे आभ्यंतर स्वरूप को नहीं (ऐसा वे वातरशना मुनि प्रकट करते हैं)।

ऋग्वेद में उक्त ऋचाओं के साथ 'केशी' की स्तुति की गई है–

केश्यग्निं केशी विषं केशी बिभर्त्ति रोदसी।
केशी विश्वं स्वर्दृशे केशीदं ज्योतिरूच्यते ॥

(ऋग्वेद १०, १३६,१)

केशी अग्नि, जल तथा स्वर्ग और पृथ्वी को धारण करता है। केशी समस्त विश्व के तत्वों का दर्शन कराता है। केशी ही प्रकाशमान (ज्ञान-) ज्योति (केवल-ज्ञानी) कहलाता है।

केशी की यह स्तुति उक्त वातरशना मुनियों के वर्णन आदि में की गई है, जिससे प्रतीत होता है कि केशी वातरशना मुनियों के वर्णन के प्रधान थे।

ऋग्वेद के इन केशी व वातरशना मुनियों की साधनाओं का भागवत पुराण में उल्लिखित वातरशना श्रमण ऋषि, उनके अधिनायक ऋषभ और उनकी साधनाओं की तुलना करने योग्य है। ऋग्वेद के वातरशना मुनि और भागवत के 'वातरशना श्रमण ऋषि' एक ही सम्प्रदाय के वाचक हैं, इसमें तो किसी को किसी प्रकार के सन्देह होने का अवकाश नहीं दिखाई देता। केशी का अर्थ केशधारी होता है, जिसका अर्थ, सायणाचार्य ने 'केश स्थानीय रश्मियों को धारण करनेवाले' किया है, और उससे सूर्य का अर्थ निकाला है। किन्तु उसकी कोई सार्थकता व संगति वातरशना मुनियों के साथ नहीं बैठती, जिनकी साधनाओं का उस सूक्त में वर्णन है। केशी स्पष्टतः वातरशना मुनियों के अधिनायक ही हो सकते हैं, जिनकी साधना में मलधारण, मौनवृत्ति और उन्माद भाव का विशेष उल्लेख है। सूक्त में आगे उन्हें ही **'मुनिर्देवस्य देवस्य सौकृत्याय सखा हितः'** (ऋ. १०,१३६,४)

अर्थात् देव देवों के मुनि व उपकारी और हितकारी सखा कहा है। वातरशना शब्द में और मल रूपी वसन धारण करने में उनकी नाग्न्य वृत्ति का भी संकेत है। इसकी भागवत पुराण में ऋषभ के वर्षन से तुलना कीजिए।

'उर्वरित-शरीरमात्र-परिग्रह उन्मत्त इव गगन-परिधानः प्रकीर्णकेशः आत्मन्यारोपिताहवनीयो व्रह्मावर्तात् प्रधव्राज। जडान्ध-मूक-वधिर पिशाचोन्मादकवद् अवधूतवेषो अभिभाष्यमाणीऽपि जनानां गृहीतमौनवृतः तूष्णों बभूव।.....परागवलम्बमानकुटिल-जटिल-कपिश-केशभूरि-भारः अवधूत-मलिन-निजशरीरेण ग्रहगहीत इवादृश्वत। (भा.पु.५,६,२८-३१)

अर्थात् ऋषभ भगवान के शरीर मात्र परिग्रह बच रहा था। वे उन्मत्त के समान दिगम्बर वेशधारी, बिखरे हुए केशों सहित आहवनीय अग्नि को अपने में धारण करके ब्रह्मावर्त देश से प्रव्रजित हुए। वे जड़, अन्ध, मूक, बधिर, पिशाचोन्माद युक्त जैसे अवघूत वेष में लोगों के बुलाने पर भी मौनवृत्ति धारण किए हुए चुप रहते थे। ......सब ओर लटकते हुए अपने कुटिल, जटिल, कपिश केशों के भार सहित अवधूत और मलिन शरीर सहित वे ऐसे दिखाई देते थे, जैसे मानों उन्हें भूत लगा हो।

यथार्थतः यदि ऋग्वेद के उक्त केशी संबंधी सूक्त को, तथा भागवत पुराण में वर्णित ऋषभदेव के चरित्र को सन्मुख रखकर पढ़ा जाय, तो पुराण में वेद के सूक्त का विस्तृत भाष्य किया गया सा प्रतीत होता है। वही वातरशना या गगनपरिधान वृत्ति, केश-धारण, कपिश वर्ण, मलधारण, मौन, और उन्माद-भाव समान रूप से दोनों में वर्णित हैं। ऋषभ भगवान् के कुटिल केशों की परम्परा जैन मूर्ति कला में प्राचीनतम काल से आज तक अक्षुण्ण पाई जाती है। यथार्थतः समस्त तीर्थंकरों में केवल ऋषभ की ही मूर्त्तियों के सिर पर कुटिल केशों का रूप दिखलाया जाता है, और वही उनका प्राचीन विशेष लक्षण भी माना जाता है। इसी संबंध में मुझे केसरिया नाथ का स्मरण आता है, जो ऋषभनाथ का ही नामान्तर है। केसर, केश और जटा एक ही अर्थ के वाचक हैं 'सटा जटा केसरयोः'। सिंह भी अपने केशों के कारण केसरी कहलाता है। इस प्रकार केशी और केसरी एक ही केसरियानाथ या ऋषभनाथ के वाचक प्रतीत होते हैं। केशरियानाथ पर जो केशर चढ़ाने की विशेष मान्यता प्रचलित है, वह नामसाम्य के कारण उत्पन्न हुई प्रतीत होती है। जैन पुराणों में भी ऋषभ की जटाओं का सदैव उल्लेख

किया गया है । पद्मपुराण (३,२८८) में वर्णन है, **'वातोद्धूता जटास्तस्य रेजुराकुलमूर्तयः'** और हरिवंश पुराण (९,२०४) में उन्हें कहा है– **'स प्रलम्बजटाभारभ्राजिष्णुः'** । इस प्रकार ऋग्वेद के केशी और वातरशना मुनि, तथा भागवत पुराण के ऋषभ और वातरशना श्रमण ऋषि एवं केसरिया नाथ ऋषभ तीर्थंकर और उनका निर्ग्रन्थ सम्प्रदाय एक ही सिद्ध होते हैं ।

केशी और ऋषभ के एक ही पुरूषवाची होने के उक्त प्रकार अनुमान करने के पश्चात् हठात् मेरी दृष्टि ऋग्वेद की एक ऐसी ऋचा पर पड़ गई जिसमें वृषभ और केशी का साथ साथ उल्लेख आया है । वह ऋचा इस प्रकार है :–

ककर्दवे वृषभो युक्त आसीद् ।
अवावचीत् सारथिरस्य केशी ॥
दुधर्युक्तस्य द्रव्रतः सहानस ।
ऋच्छन्ति मा निष्पदो मुद्‌गलानीम् ॥

(ऋग्वेद १०,१०२,६)

जिस सूक्त में यह ऋचा आई है उसकी प्रस्तावता में निरूक्त के जो 'मुद्‌गलस्य हृता गावः' आदि श्लोक उद्‌धृत किए गए हैं, उनके अनुसार मुद्‌गल ऋषि की गौवों को चोर चुरा ले गए थे । उन्हें लौटाने के लिए ऋषि ने केशी वृषभ को अपना सारथी बनाया, जिसके वचन मात्र से वे गौएं आगे को न भागकर पीछे की ओर लौट पड़ी । प्रस्तुत ऋचा का भाष्य करते हुए सायणाचार्य ने पहले तो वृषभ और केशी का वाच्यार्थ पृथक् बतलाया है । किन्तु फिर प्रकारान्तर से उन्होंने कहा है :–

'अथवा, अस्य सारथिः सहायभूतः केशी प्रकृष्टकेशो वृषभः अवावचीत् भ्रशमशब्दयत्' इत्यादि ।

सायण के इसी अर्थ को तथा निरूक्त के उक्त कथा-प्रसंग को भारतीय दार्शनिक परम्परानुसार ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत गाथा का मुझे यह अर्थ प्रतीत होता है–

मुद्‌गल ऋषि के सारथी (विद्वान् नेता) केशी वृषभ जो शत्रुओं का विनाश करने के लिए नियुक्त थे, उनकी वाणी निकली, जिसके फलस्वरूप जो मुद्‌गल ऋषि की गौवें (इन्द्रियां) जुते हुए दुर्घर रथ (शरीर) के साथ दौड़ रही थी, वे निश्चल होकर मौद्‌गलानी (मुद्‌गल की स्वात्मवृत्ति) की

ओर लौट पड़ी।

तात्पर्य यह कि मुद्‌गल ऋषि की जो इन्द्रियां पराङ्‌मुखी थी, वे उनके योगयुक्त ज्ञानी नेता केशी वृषभ के धर्मोपदेश को सुनकर अन्तर्मुखी हो गई।

इसप्रकार केशी और वृषभ या ऋषभ के एकत्व का स्वयं ऋग्वेद से ही पूर्णतः समर्थन हो जाता है। विद्वान् इस एकीकरण पर विचार करें। मैं पहले ही कह चुका हूं कि वेदों का अर्थ करने में विद्वान् अभी पूर्णतः सफल नहीं हो सके हैं। विशेषतः वेदों की जैसी भारतीय संस्कृति में पदप्रतिष्ठा है, उसकी दृष्टि से तो अभी उनके समझने समझाने में बहुत सुधार की आवश्यकता है। मुझे आशा है कि केशी, वृषभ या ऋषभ तथा वातरशना मुनियों के वेदान्तर्गत समस्त उल्लेखों के सूक्ष्म अध्ययन से इस विषय के रहस्य का पूर्णतः उद्‌घाटन हो सकेगा। क्या ऋग्वेद (४,५८,३) के '**त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो मर्त्यानाविवेश**' का यह अर्थ नहीं हो सकता कि त्रिधा (ज्ञान, दर्शन और चारित्र से) अनुबद्ध वृषभ ने धर्म-घोषणा की और वे एक महान देव के रूप में मर्त्यो में प्रविष्ट हुए ? इसी संबंध में ऋग्वेद के शिश्नदेवों (नग्न देवों) वाले उल्लेख भी ध्यान देने योग्य हैं (ऋ. वे ७,२१,५; १०,९९,३)। इसप्रकार ऋग्वेद में उल्लिखित वातरशना मुनियों के निर्ग्रंथ साधुओं तथा उन मुनियों के नायक केशी मुनि का ऋषभदेव के साथ एकीकरण हो जाने से जैन धर्म की प्राचीन परम्परा पर बड़ा महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। वेदों के रचनाकाल के सम्बन्ध में विद्वानों के बीच बहुत मतभेद है। कितने ही विद्वानों ने उन्हें ई॰ सन् से ५००० वर्ष व उससे भी अधिक पूर्व रचा गया माना है। किन्तु आधुनिक पाश्चात्य भारतीय विद्वानों का बहुमत यह है कि वेदों की रचना उसके वर्त्तमान रूप में ई॰ पूर्व सन् १५०० के लगभग हुई होगी। चारों वेदों में ऋग्वेद सब से प्राचीन माना जाता है। अतएव ऋग्वेद की ऋचाओं में ही वातरशना मुनियों तथा 'केशी ऋषभदेव' का उल्लेख होने से जैन धर्म अपने प्राचीन रूप में ई॰ पूर्व सन् १५०० में प्रचलित मानना अनुचित न होगा। केशी नाम जैन परम्परा में प्रचलित रहा, इसका प्रमाण यह है कि महावीर के समय में पार्श्व सम्प्रदाय के नेता का नाम केशीकुमार था (उत्तरा. २३)।

उक्त वातरशना मुनियों की जो मान्यता व साधनाएं वैदिक [illegible] में

श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

भी उल्लिखित हैं, उनपर से हम इस परम्परा को वैदिक परम्परा से स्पष्टतः पृथक् रूप से समझ सकते हैं। वैदिक ऋषि वैसे त्यागी और तपस्वी नही, जैसे ये वातरशना मुनि । वे ऋषि स्वयं गृहस्थ हैं, यज्ञ सम्बन्धी विधि-विधान में आस्था रखते हैं और अपनी इहलौकिक इच्छाओं, जैसे पुत्र, धन, धान्य, आदि सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए इन्द्रादि देवी-देवताओं का आह्वान करते कराते हैं, तथा इसके उपलक्ष में यजमानों से धन-सम्पत्ति का दान स्वीकार करते हैं। किन्तु इसके विपरीत ये वातरशना मुनि उक्त क्रियाओं में रत नहीं होते । समस्त गृह द्वार, स्त्री-पुत्र, धन-धान्य आदि परिग्रह, यहाँ तक कि वस्त्र का भी परित्याग कर, भिक्षावृत्ति से रहते हैं । शरीर का स्नानादि संस्कार न कर मल धारण किए रहते हैं । मौनवृत्ति से रहते हैं, तथा अन्य देवी-देवताओं के आराधन से मुक्त आत्मध्यान में ही अपना कल्याण समझते हैं। स्पष्टतः यह उस श्रमण परम्परा का प्राचीन रूप है, जो आगे चलकर अनेक अवैदिक सम्प्रदायों के रूप में प्रगट हुई और जिनमें से दो अर्थात् जैन और बौद्ध सम्प्रदाय आज तक भी विद्यमान हैं । प्राचीन समस्त भारतीय साहित्य, वैदिक, बौद्ध व जैन तथा शिलालेखों में भी ब्राह्मण और श्रमण सम्प्रदायों का उल्लेख मिलता है। जैन एवं बौद्ध साधु आजतक भी श्रमण कहलाते है । वैदिक परम्परा के धार्मिक गुरू कहलाते थे ऋषि, जिनका वर्णन ऋग्वेद में बारंबार आया है। किन्तु श्रमण परम्परा के साधुओं की संज्ञा मुनि थी, जिसका उल्लेख ऋग्वेद में केवल उन वातरशना मुनियों के संबंध को छोड़, अन्यत्र कहीं नहीं आया । ऋषि-मुनि कहने से दोनों सम्प्रदायों का ग्रहण समझना चाहिए। पीछे परस्पर इन सम्प्रदायों का खूब आदान-प्रदान हुआ दोनों शब्दों को प्रायः एक दूसरे का पर्यायवाची माना जाने लगा ।

क्रमशः

श्रावक जीवन

आचार्य श्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी

परम कृपानिधि महान् श्रुतधर आचार्यश्री हरिभद्रसूरिजी स्वःरचित 'धर्मबिन्दु' ग्रन्थ के तीसरे अध्याय में गृहस्थ जीवन का विशेष धर्म बताते हैं। विशेष धर्म यानी सम्यकत्वमूलक बारह व्रत। सामान्य धर्मों के पालन के साथ जो महानुभाव विशेष धर्म का पालन करता है वह मनुष्य इस जीवन को और पारलोकिक जीवन को सफल बना देता है। उसका जीवन श्रेष्ठ जीवन होता है। श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए बारह व्रतों का ज्ञान होना आवश्यक है। आज मैं आपको तीसरा 'गुणव्रत' बताऊंगा। इस गुणव्रत का नाम है 'अनर्थदंड विरमण'।

अर्थदंड और अनर्थदंड :

'अनर्थदंड' को समझने के लिए अर्थदड समझना आवश्यक होता है। दंड का अर्थ है सजा। सजा यानी पापकर्म का बंधन। पाप दो प्रकार के होते हैं : आवश्यक और अनावश्यक। आवश्यक पाप अर्थदंड है, अनावश्यक पाप अनर्थदंड है! मनुष्य जितने आवश्यक पाप करता है, उससे बहुत ज्यादा अनावश्यक पाप करता है। वे पाप मनुष्य मन से, वाणी से और शरीर (पांच इन्द्रिय) से करता है। आप लोगों को दोनों प्रकार के आवश्यक-अनावश्यक पापों को जान लेना चाहिए। जानकर अनावश्यक पापों का त्याग करने का प्रयत्न करना चाहिए।

प्रश्न : हमें तो पाप-पुण्य का विचार भी नहीं आता है!

महाराजश्री : अभी सुख में नहीं आते होंगे पाप-पुण्य के विचार, दुःख में जरूर आयेंगे। उस समय उलझ नहीं जाओगे, यदि अभी पापों का ज्ञान प्राप्त कर लोगे तो! अनावश्यक पापों को जानो और उनका त्याग करो। चूंकि अनावश्यक पाप करने से कर्मबंधन प्रगाढ़ होता है। अतः अनर्थदंड-विरमण व्रत की प्रतिज्ञा इस प्रकार लेनी चाहिए—

अनर्थदंड-विरमण व्रत :

१. मैं दूसरों को आरंभ-समारंभ का उपदेश नहीं दूंगा।

२. घट्टी, कैंची, तलवार इत्यादि आरंभ-समारंभ के साधन दूसरों को नहीं दूंगा।

३. दूध-दही, घी, तेल वगैरह के बरतन खुले नहीं रखूंगा।

४. नाटक, सिनेमा, सरकस, तमाशा, वेश्याओं का नाच-मुजरा वगैरह नहीं देखूंगा।

५. मल्लकुश्ती, फांसी, ताबूत (मोहर्रम) इत्यादि नहीं देखूंगा।

६. हिंसक पशु (बिल्ली वगैरह) का पालन नहीं करूंगा।

७. नदी, सरोवर, समुद्र, कुंड, कुँआ आदि में स्नान नहीं करूंगा।

८. जोर जोर से हंसूंगा नहीं।

९. विकारोत्पादक शब्द नहीं बोलूंगा। हास्योत्पादक बातें नहीं करूंगा।

ये सारे अनावश्यक पाप हैं। और भी हैं, परन्तु वे पाप बाद में बताऊंगा। अभी तो इस प्रतिज्ञा को कुछ विस्तार से बताता हूं।

आरंभ-समारंभ का उपदेश नहीं देना :

जिस क्रिया में छोटे-बड़े जीवों की ज्यादा हिंसा होती है, वैसी क्रियाओं को करने का उपदेश दूसरों को नहीं देना चाहिए। यदि आप के हृदय में जीवदया का तीव्र कोटि का शुभ भाव है, तो आप स्वयं अपने जीवन में वैसी क्रियाएँ नहीं करेंगे, दूसरों को उपदेश देने की तो बात ही कहां ? फिर भी, मान लो कि आप की फेक्टरी चलती है, मिल चलती है...यंत्रों में जीवों की हिंसा होती है, फिर भी आप दूसरों को ऐसी प्रेरणा नहीं दोगे कि : 'तुम ऐसी फेक्टरी शुरू करो...बहुत पैसे कमाओगे...तुम ऐसी मिल डालो, करोड़पति बन जाओगे...देखो, हमने पांच साल में दो करोड़ कमा लिए... !'

आप यदि आप के आरंभ-समारंभ में खुश नहीं हैं, आप आपकी मजबूरी अथवा धनलोलुपता मानते हैं, तो आप दूसरों को वैसे आरंभ-समारंभ के धंधे करने की प्रेरणा नहीं देंगे।

प्रश्न : कोई हमारी राय लेने आए तो ?

महाराजश्री : जिस बिजनेस में ज्यादा जीवहिंसा होती हो, वैसा धंधा करने की राय नहीं देनी चाहिए। एक महत्वपूर्ण तत्त्वज्ञान उसको देना चाहिए कि 'भैया, पैसे धंधा करने से ही नहीं मिलते। पैसे मिलते हैं पुण्य कर्म के उदय से। अंतराय कर्म टूटने से। धंधा तो मात्र निमित्त है। इसलिए

ऐसा बिजनेस करो कि जिस में ज्यादा जीवों की हिंसा नहीं होती हो ।' सामनेवाला व्यक्ति यदि आपको पूछे कि 'आप क्यों फेक्टरी चलाते हो ? फेक्टरी में ज्यादा जीवहिंसा होती है ।' तो आप कहना : 'मेरा पापकर्म का उदय है । मैं मानता हूं कि मेरा धंधा पाप का है, और मैं इस धंधे से जल्दी मुक्त होने का विचार करता हूं ।' कहोंगे न ? आरंभ-समारंभ के धंधे आपको शोभा नहीं देते हैं । असंख्य-अनंत जीवों की हिंसा कर, लाखों-करोड़ों रूपये भले कमा लो, वे रूपये ही आपके पतन में निमित्त बनेंगे, दुर्गति में ले जायेंगे ।

आरंभ-समारंभ के साधन दूसरों को नहीं दें :

जिस प्रकार आरंभ-समारंभ की दूसरों को प्रेरणा नहीं देना है वैसे दूसरों को आरंभ-समारंभ के साधन भी नहीं देना है । आपको आरंभ-समारंभ के साधन रखते पड़ते हैं, वह अर्थदंड है, चूंकि आपके लिए वे साधन अनिवार्य हो सकते हैं और उन साधनों का दुरूपयोग आप नहीं करते हैं, नहीं करवाते हैं । परन्तु वे साधन दूसरे लोगों को देने पर, वे लोग उनका दुरूपयोग नहीं करेंगे, वैसी गारंटी कौन देगा ?

प्रश्न : हमारे पास घट्टी वगैरह है, और पडौसी अथवा स्नेही मांगता है, नहीं देते हैं तो औचित्यभंग नहीं होता है क्या ?

महाराजश्री : नहीं होता है । जवाब योग्य और मृदु भाषा में देना चाहिए । उनको बुरा लगे वैसा नहीं बोलना चाहिए और झूठ भी नहीं बोलना चाहिए । कहना चाहिए कि 'हमारे पास है घट्टी, हमारे पास है मशीन, परन्तु हम व्रतधारी हैं, इसलिए ऐसे आरंभ-समारंभ के साधन दूसरों को नहीं दे सकते हैं । क्षमा करना, दूसरी कोई वस्तु चाहिए तो निःसंकोच मांग लेना !'

इस व्रत में जीव दया ही प्रधान हेतु है । आपके साधनों से दूसरे लोग जीवहिंसा नहीं करें, यही कारण है, दूसरों को वैसे साधन नहीं देने में । कभी निष्कारण कोई आफत भी आ सकती है । कुछ वर्ष पहले एक घटना पढ़ी थी । घटना सही थी । कोर्ट में केस भी चला था ।

मित्र को रीवाल्वर दे दी...

दो मित्र थे । एक मित्र के पास रीवाल्वर का लायसंस था । दूसरे मित्र को मालूम था । एक दिन वह सुबह में मित्र के घर गया और बोला : 'मुझे

आज बाहर जाना है, थोड़ा खतरा है, इसलिए तेरी रीवाल्वर चाहिए । कल सुबह लौटा दूंगा । स्वरक्षा के लिए ही चाहिए । चिंता नहीं करना ।'

मित्र ने दे दी अपनी रीवाल्वर । रीवाल्वर में कारतूस भी भरे हुए थे। वह लेकर गया अपने घर पर । अपनी अलमारी में रीवाल्वर रख दी । भोजन कर लिया । अपने कमरे में जाकर बैठ गया ।

बात दूसरी ही थी । उसकी पत्नी एक आवारा व्यक्ति के प्रेम में थी । वह व्यक्ति 'दादा' टाइप का था । उसने अपनी पत्नी को अनेक बार समझाने को प्रयत्न किया था, परन्तु पत्नी मानती नहीं थी और उस 'दादा' से डरती भी थी । उसने आज अपनी पत्नी और उस दादा को जहन्नुम में भेजने का निर्णय कर लिया था । जहां वे दोनों मिलते थे, वहां जा कर काम करने का सोचा था । दोनों का मिलने का समय दोपहर तीन बजे का होता था। वह अफिस जाने के लिए निकल गया ।

तीन बजे वह उस जगह पहुंच गया । उसने वहां जो दृश्य देखा, वह आगबबूला हो गया । उस ने रीवाल्वर निकाली और धड़...घड़ गोलियाँ छोड़ दी । दोनों-वह दादा और उसकी औरत...वहां ही ढेर हो गए । दोनों के प्राणपखेरू उड़ गए ।

रीवाल्वर की आवाज से आसपास रहनेवाले लोग वहां आ गए... और इसको पकड़ लिया । पुलिस भी आ गयी । रीवाल्वर के साथ पकड़ा गया । कस्टडी में बंद कर दिया गया । जिस व्यक्ति के नाम रीवोल्वर का लायसंस था, उस व्यक्ति को भी गिरफ्तार कर लिया । 'हत्या में सहयोगी' का आरोप लगा दिया गया और कुछ वर्ष कारावास में बिताने पड़े !

जैसे यह घटना रीवाल्वर को लेकर घटी, वैसे तलवार, छुरी वगैरह शस्त्रों को लेकर भी घटती है । इसलिए दूसरों को हिंसा के साधन नहीं देने का उपदेश ज्ञानी पुरूषों ने दिया है ।

दूध-दहीं, घी-तेल वगैरह के बरतन खुले नहीं रखें :

जीवदया के ही लक्ष्य से ये बातें बतायी जा रही हैं । छोटे जीवों के प्रति भी दया से ही व्यवहार करना चाहिए । सभी जीवों में चैतन्य समान रूप से रहा हुआ है । चींटी हो या हाथी हो, मनुष्य हो या देव हो, चैतन्य सभी में है । उन के प्रति दयाभाव रखना है । उन जीवों को दुःख हो, कष्ट हो, अथवा उनकी मृत्यु हो, वैसा व्यवहार नहीं करना है ।

घर में दूध-दही, घी-तेल जैसी खाद्य वस्तुएं होती ही है । उन के बरतन ढक कर रखने चाहिए । यदि बरतन खुला रहता है तो उस में हजारों-लाखों कीड़ियाँ, मकोड़े...गिरते हैं और मर जाते हैं । कभी बड़े जीव भी उस में गिर कर मरते हैं । कभी विषैले जीव भी गिरते हैं और खाद्य वस्तु को विषैली बना देते हैं । इसलिए दूध वगैरह के बरतनों को ढकने में प्रमाद नहीं करना चाहिए ।

एक महिला ने बताया था कि उसने शाम को रसोईघर में दूध रख छोड़ा था । रात्रि में बच्चे को दूध पिलाना था । दूध का बरतन खुला रह गया था । शाम को वह सिनेमा देखने चली गई । वापस १० बजे वह घर लौटी । उसने जल्दी-जल्दी में दूध देखा नहीं और बच्चे को पिला दिया । दूध पीते ही बच्चे ने उलटी कर दी । बच्चा बेहोश हो गया । डाक्टर को बुलाया। दूध के बरतन में थोड़ा दूध पड़ा था । डाक्टर ने दूध देखा । दूध में एक कीड़ा मरा हुआ पड़ा था । कीड़ा विषैला था । डाक्टर ने इस महिला को बहुत डांटा, तुरन्त बच्चे को दो इंजेक्शन दे दिए । हास्पिटल में ले गए । भाग्ययोग से बच्चा बच गया ।

प्रश्न : आजकल महिलाये प्रायः बरतन ढकती ही नहीं है, परवाह ही नहीं करती...बरतन खुले पड़े रहते हैं ।

महाराजश्री : इस से जीवहिंसा तो होती ही है, परन्तु आप लोगों के स्वास्थ्य को भी हानि होती है । यह काम विशेष रूप से महिलाओं का है । महिलाओं को इस काम में प्रमाद नहीं करना चाहिए । भले, व्रत लें या नहीं ले, घी-तेल वगैरह के बरतन खुले नहीं रखने चाहिए । यह तो एक सामान्य बुद्धि-कॉमन सेन्स की बात है ।

नाटक, सिनेमा, सरकस, तमाशा वगैरह नहीं देखें :

जिस प्रकार अनर्थदंड के त्याग में जीवदया की दृष्टि है, वैसे आत्मसंयम, इन्द्रियविजय और मनोनिग्रह की दृष्टि भी रही हुई है । ऐसे दृश्य नहीं देखने चाहिए कि जिस से आत्मसंयम टूट जाय, इन्द्रियाँ चंचल हो जाय और मन स्वच्छंदी बन जाय ।

जीवन में आनन्द चाहिए, मनोरंजन चाहिए, मानता हूं यह बात, परन्तु वह आनन्द और वह मनोरंजन ऐसा नहीं होना चाहिए कि जिस से आत्मा मलीन हो, मन चंचल हो और इन्द्रियाँ उत्तेजित हों । इस दृष्टि से नाटक

देखना, सिनेमा देखना, सरकस देखना, तमाशा देखना, वेश्याओं के नृत्य देखना...'अनर्थदंड' कहा गया है। व्रतधारी बनना है तो इस अनर्थदंड का त्याग करना ही पड़ेगा। अरे, व्रतधारी नहीं, सद्गृहस्थ बने रहना है, तो भी इस विषय में गंभीरता से सोचना होगा।

सिनेमा, नाटक...तमाशा जब तक देखते रहोगे तब तक मन स्थिर और शान्त रहनेवाला नहीं है। और, कुछ वर्षों से आप लोगों के घरों में विडियो...T.V. आ गए हैं...तब से आप लोगों के मन की स्थिति ही बदल गई है।

मारधाड़ और सेक्स से भरी हुई फिल्में देखकर क्या आप लोगों के मन में शान्ति, समता और प्रसन्नता आनेवाली है ? याद रखना, दिमाग का संतुलन बिगड़ जाएगा। अशान्ति की आग में जल कर राख हो जाओगे।

नाटक भी कैसे गंदे, बिभत्स और सैक्सी हो रहे हैं ? शील और संस्कारों का नामोनिशान मिटा दिया गया है। यदि आपको अध्यात्म के मार्ग पर चलना है तो दुनिया के ऐसे नाटकों का मोह छोड़ना ही होगा। धर्म के साथ, अध्यात्म के साथ नाटक-सिनेमा का मेल-जोल जमता ही नहीं है। विशेष धर्म की आराधना करने की अभिलाषा हृदय में जगने पर, ऐसी तुच्छ विलासी बातें उनके मन को स्पर्श ही नहीं कर सकती है।

सरकस का निषेध इसलिए किया गया है कि उसमें पशुओं को त्रास दिया जाता है। पशुओं के खेल जो किए जाते हैं, उन में पशुओं को त्रास दिया जाता है। देखनेवाले खुश होते हैं...इस से पापकर्म बंधते हैं। सामुदायिक पापकर्म भी बंधते हैं। सिनेमा-नाटक और सरकस में सामुदायिक (जितने देखनेवाले होते हैं, उन सभी का) कर्म का बंधन होता है। एक अशुभ दृश्य सभी एक साथ देखकर राजी होते हैं- तब एक साथ पापकर्म बांधते हैं और जब वह पापकर्म उदय में आता है तब उन सभी को एक साथ दुःख आता है !

जैसे हवाई जहाज का अकस्मात एक्सीडैंट होता है और एक साथ १००/२०० व्यक्ति मर जाते हैं, जैसे ट्रेन का अकस्मात एक्सीडैंट होता है और एक साथ २००/४०० मर जाते हैं...बस के, गाड़ी के, स्टीमर के अकस्मात एक्सीडैंट होते हैं...और एकसाथ ५०/१००/२००/४०० मर जाते हैं। भूकंप आता है और एक साथ हजार/लाख लोग मर जाते हैं ! यह

सब सामुदायिक पापकर्मोंका फल होता है ।

आजकल T.V. पर एक साथ दो-चार करोड़ लोग सिनेमा वगैरह देखते हैं । इस में अच्छी-बुरी बातें आती ही हैं...सब लोग एक साथ अच्छे दृश्य में खुश होते हैं तो सामुदायिक पुण्यकर्म बांधते हैं और एक साथ बुरे दृश्य में खुश होते हैं तो सामुदायिक पापकर्म बांधते हैं । परन्तु T.V. के पर्दे पर अच्छी...मन को पवित्र-निर्मल करनेवाली बातें कितनी आती हैं और मन को पापी बनानेवाली...हिंसा, चोरी, दुराचार-व्यभिचार और बेईमानी बढ़ानेवाली कितनी बातें आती हैं–यह आप लोग अच्छी तरह जानते हो ।

इसलिए हम लोग आपको T.V.-विडियो वगैरह नहीं देखने का उपदेश देते हैं । हम लोग आपके मन की और आत्मा की चिंता करते हैं । व्रतधारी बनने की बात इसी दृष्टि से कही जा रही है । जचती है न यह बात ? जचानी पड़ेगी । अन्यथा ये सिनेमा, नाटक और डान्स पार्टियाँ आपको दुःख-अशान्ति और संताप की गहरी खाई में पटक देंगी ।

मल्लकुश्ती, फांसी वगैरह नहीं देखें :

देखने-देखने में कितने पापकर्म बंधते हैं ? इसलिए जो देखना अनिवार्य नहीं हो, वह नहीं देखना चाहिए । जो देखे बिना अपनी जीवनयात्रा सुखरूप चलती रहती हो, वह क्यों देखना ?

लोग मल्लकुश्ती देखने जाते हैं । आप लोग शायद नहीं जाते होंगे । महिलाएं भी नहीं जाती होंगी ? T.V. पर भले देखते होंगे...परन्तु आप मल्लकुश्ती नहीं देखें तो जीवनयात्रा रूक नहीं जाएगी । अथवा आपको कोई शारीरिक या आर्थिक नुकसान भी होनेवाला नहीं है ! फिर क्यों देखना ? वैसी कुश्तियाँ देखने से राग द्वेष बढ़ते हैं ! आपका प्रिय पहलवान जीतेगा तो खुश, हारेगा तो नाराज हो जाओगे न ? नहीं देखनी चाहिए मल्लकुश्ती ।

वैसे कुछ लोगों को फांसी देखने में मजा आता है । अभी इस युग में जाहिर में फांसी नहीं दी जाती है । जहां फांसी दी जाती है वहां सभी लोग जा भी नहीं सकते हैं । परन्तु फिर भी कुछ लोग सरकारी इजाजत लेकर जाते हैं देखने । वहां पर मानो कि किसी हत्यारे को, दुष्ट व्यक्ति को फांसी दी जाती हो, देखनेवाले के मन में 'अच्छा है, ऐसे दुष्टों को फांसी देनी ही चाहिए...' ऐसा विचार आ जाय तो घोर पापकर्म बंध जाता है । उसके फलस्वरूप किसी भी जन्म में उसको फांसी की सजा मिलती है !

मल्लकुश्ती देखना, फांसी देखना, ताबूत देखना...सब अनर्थदंड है, फालतू बातें हैं। जीवन में ऐसे तुच्छ आनन्द नहीं होने चाहिए। व्रतधारी बनने के लिए ऐसी बातें देखने की इच्छा ही नहीं होनी चाहिए।

हिंसक पशुओं का पालन नहीं करें :

वैसे, व्रतधारी को हिंसक पशुओं का पालन नहीं करना चाहिए। बिल्ली, कुत्ता, शेर वगैरह हिंसक पशु हैं। हालांकि आप लोग शेर, चीता वगैरह को पालतू नहीं रखते हो, परन्तु बिल्ली और कुत्तों को तो पालतु बनाकर रखने का फेशन हो गया है न ? बिल्ली और कुत्ता, उनका शिकार मिलने पर हिंसा करेंगे ही। उस हिंसा का पाप आप को भी लगेगा।

वैसे आपस में पशुओं को लड़ाने भी नहीं चाहिए। व्रतमय जीवन के साथ ये बातें जँचती नहीं हैं ! ऐसी बातें व्रतमय जीवन में होनी ही नहीं चाहिए !

प्रश्न : गाय, भैंस, घोड़ा...वगैरह पशुओं का पालन व्रतधारी कर सकता है न ?

महाराजश्री : कर सकता है। गाय, भैंस, घोड़ा वगैरह हिंसक प्राणी नहीं हैं। लेकिन आप लोग गाय-भैंस का पालन करना चाहते हैं क्या ? यदि संपूर्ण हिन्दु समाज और जैन समाज गाय-भैंसों का पालन करना शुरू कर दे तो एक भी गाय या भैंस कत्लखाने में नहीं जा सकती है ! जीवदया का अपूर्व कार्य ही सकता है। परन्तु आप लोगों को वह कार्य नहीं करना है। आप को तो कुत्तों का पालन करना है ! याद रखना, कुत्तों से प्यार हो गया तो आने वाला जन्म कुत्ते का मिलेगा ! पसंद है न कुत्ता होना ? सोच लेना !

नदी, सरोवर, समुद्र, कुंड में स्नान नहीं करें :

निष्प्रयोजन जैसे पशुपालन नहीं करना है वैसे व्रतधारी श्रावक को नदी में, सरोवर में, समुद्र में या कुंड में स्नान नहीं करना चाहिए। चूंकि उन स्थानों में जीव ज्यादा होते हैं, हिंसा होती है।

प्रश्न : स्वीमिंग पुल...बाथ में स्नान कर सकते हैं क्या ?

महाराजश्री : नहीं, नहीं कर सकते। वहां भी पानी छाना हुआ नहीं होता है। भले उस में मछलियां नहीं होती होंगी, दूसरे जीव भी नहीं होते होंगे, परन्तु 'अप्‌काय' के यानी पानी के जीव तो होते ही हैं ! व्रतधारी

श्रावक निष्प्रयोजन एकेन्द्रिय जीवों की भी हिंसा करना पसंद नहीं करेगा। इसलिए वह अपने ही घर में थोड़े से पानी से, वह भी छाना हुआ, उस से स्नान करेगा। आजकल आप लोग कोई कुँए के किनारे जा कर या तालाब के किनारे पर बैठ कर स्नान नहीं करते हैं। यदि वहां भी स्नान करना हो तो छान कर पानी बरतन में लेकर स्नान करना चाहिए।

व्रतधारी श्रावक पानी का बहुत ही कम, जितना अनिवार्य हो उतना ही उपयोग करेगा। और यदि आज के युग में आप लोग भले व्रतधारी नहीं हो, फिर भी पानी का बहुत ही कम उपयोग करने लगो तो देश की पानी की समस्या हल हो जाय न ? कितना दुरूपयोग करते हो पानी का ? दुःख पाओगे। कुदरत रूठी है...। कुछ समझदार बनोगे तो बचोगे...अन्यथा विनाश निकट है।

जोर जोर से हंसना नहीं है :

व्रतधारी श्रावक बनना है तो ये सारी मर्यादायें पालनी ही होंगी। एक महत्वपूर्ण मर्यादा अब बताता हूं। श्रावक को जोर-जोर से हंसना नहीं चाहिए। अट्टहास्य नहीं करना चाहिए। हाँ, स्मित हो सकता है। सामान्य हास्य निषिद्ध नहीं है।

प्रश्न : कभी डॉक्टर कहते हैं कि जोर-जोर से हंसना !

महाराजश्री : उपचार के रूप में हंसना पड़ता है तो भले हंसो परंतु बात-बात में जोर-जोर से हंसने की आदत व्रतधारी को शोभा नहीं देती है। व्रतधारी का व्यक्तित्व महान् होता है। जोर-जोर से अट्टहास्य करने में व्यक्तित्व निम्न स्तर का हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है आप गंभीर रहते हैं, आप के मुंह पर स्मित भी नहीं रमता है, तो हंसते हैं, तो भी अच्छा नहीं लगेगा।

हंसते हुए भी आप की गंभीरता अक्षुण्ण रहनी चाहिए। आप का हास्य भी अर्थगंभीर होना चाहिए। व्रतधारी का हास्य उस के व्रतमय जीवन की उदात्तता का परिचायक होना चाहिए।

विकारोत्पादक वाणी नहीं बोलें :

जिस प्रकार जोर-जोर से हंसना नहीं है, वैसे असभ्य और विकारजनक शब्द भी नहीं बोलने हैं। व्रतधारी को ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए कि

जिस से दूसरों के मन विषयवासना से उत्तेजित हो जाय। दूसरों की इन्द्रियाँ अपने-अपने विषय पाने के लिए तत्पर हो जायं। यदि व्रतधारी श्रावक, विकारोत्तेजक वाणी बोलता है तो अपने व्रत को अतिचार लगता है। विकारजनक शब्दोच्चारण अर्थदंड है।

यानी, व्रतधारी श्रावक का वार्तालाप राग-द्वेष की उत्तेजना से मुक्त रहना चाहिए। उस का वार्तालाप रागद्वेष को उपशान्त करने वाला होना चाहिए। शान्ति-समता और प्रसन्नता के फूल खिलते हैं व्रतधारी की वाणी का वारि बरसने से।

कहने का तात्पर्य यह है कि व्रतधारी श्रावक को निष्प्रयोजन निरर्थक बोलना ही नहीं है। सत्य, प्रिय और हितकारी वचन ही उस को बोलने चाहिए।

क्रमशः

राजा सम्प्रति

"किन्तु इस प्रकार की दैवाधीन वस्तुपर कैसे विश्वास रखा जा सकता है ? संसार में हमारा सोचा हुआ सब काम थोड़े ही सफल हो जाता है ?"

"अवश्य नहीं होता ! फिर भी आशा अमर है । दुखियों के लिए तो आशा ही जीवन का आधार हो सकती है ।" सुनन्दा ने कहा ।

"परम कृपालु परमात्मा आपके मनोरथ सफल करे ।"

"तुझ ब्रह्मचारिणी का वचन सत्य-सिद्ध हो ! तेरा और मेरा तप एवं कुणाल की प्रभुभक्ति, ये सब कभी निष्फल नहीं जा सकते, चन्दा !"

वे दोनों इस प्रकार वार्तालाप कर रही थीं । वे अभी बिस्तरे से उठीं भी नहीं थी कि इतने ही में शरतकुमारी वहाँ आ पहुँची । उसका चित्र प्रसन्न था । मुखपर आनन्द की लालिमा छाई हुई थी । उस प्रसन्न वदन को देखकर सुनन्दा ने कहा :- "शरत आज तो अभी से ही प्रसन्न हो रही है ? क्यों ? है कोई विशेष बात ?"

"बाईजी ! एक शुभ समाचार सुनाऊँ ? आज कितने ही दिन से मेरे मन में वह बात घुल रही थी; किन्तु मुझे कुछ शङ्का थी । पर अब तो मुझे पूर्ण विश्वास हो गया !" इस प्रकार बातचीत करती हुई शरतकुमारी चन्दा की बगल में जाकर बैठ गई !

चन्दा और शरतकुमारी लगभग समान अवस्था की ही थीं; और दोनों ही सुन्दर एवं बुद्धिमान भी थीं । साथ ही दोनों सरल एवं सादा जीवन बिता रही थीं । इसी कारण दोनों में सखी-भावका स्नेह होना स्वाभाविक ही था । दोनों परस्पर गुप्तवार्ता भी एकान्त में करती हुई निर्दोष विनोद द्वारा चित्त प्रसन्न करती रहती थीं । चन्दा भी शरतकुमारी से एकान्त में उसकी निजी बातें पूछ कर उसे बनाती रहती थी । इस प्रकार दोनों का समय सुख पूर्वक व्यतीत हो रहा था ।

"ऐसी किस बधाई का समाचार लाई है शरत, जरा कह तो सही !" यों बेपर्वाही-सी दिखाते हुए सुनन्दा ने कहा; किन्तु फिर भी उसके हृदय में उत्कण्ठा तो थी ही ।

"कह दूँ ? आज मुझे अनुभव हुआ है कि; मेरे......." कहते-कहते शरतकुमारी शर्मा गई और चन्दा की छाती में अपना मुँह छिपालिया ।

"क्यों, लज्जित कैसे हो गई ? बोलती क्यों नही ? क्या कुछ नई-पुरानी बात हुई है ?" हँसते हुए चन्दाने उसके कान में कुछ कहा ।

"हाँ, ऐसा ही है ! तेरी बात सच है चन्दा !" शरतश्री ने चन्दा को समझा दिया ।

"चन्दा ! तुम दोनों क्या घुस-पुस बातें कर रही हो ? जरा, इन आजकल की छोकरियों को तो देखो !" सुनन्दा ने मुसकुराते हुए कहा ।

"जीजी ! इनकी बात को मैं समझ गई हूँ; किन्तु यह उसे नहीं कह सकेगी । आपकी एक धारणा आज सत्य-सिद्ध हो गई ? शत्रु के तेज का क्षय आज से आरम्भ हो गया !" चन्दा ने हँसते हुए कहा ।

"जरा स्पष्टता से क्यों नही बतलाती, चन्दा ? तेरी गोलमाल बातें मैं क्या समझूँ ?" इस प्रकार सुनन्दा ने उत्सुकता दिखाते हुए पूछा ।

"शरतकुमारी गर्भवती है ! जीजी !" चन्दाने मुसकुराते हुए खुलासा किया ।

चन्दा के शब्द सुनते ही सुनन्दा एकदम उठ बैठी और अपने सुनने में कोई भूल तो नहीं हो रही है, इस बात का निर्णय करने के लिए उसने फिर पूछा, "चन्दा ! जरा फिर से तो कहना, क्या कहा तूने ?"

"आपकी आशा फलीभूत हो रही है । अपनी शरत को गर्भ है !"

"क्या कहा ? शरत को गर्भ है !" पूर्ण विश्वास करने के लिए उसने फिर पुछा !

"हाँ; इसीलिए तो यह कहते हुए शर्माती है !"

"अहा-हा ! आज कितने ही दिनों से मेरे हृदय में रहनेवाली आशा सफल हुई ! शरत ! मेरा आशीर्वाद है कि तू राजरानी तो न बन सकी; किन्तु फिर भी राजमाता तो तू अवश्य बनेगी ! तू हमारे पूर्वज चन्द्रगुप्त और अशोक के समान पुत्र को जन्म देनेवाली माता बनेगी ।" आनन्द-पूर्वक उछलते हुए हृदय से सुनन्दा के मुख से अनायास ये शब्द निकल पड़े ।

"आपका आशीर्वाद मैं माथे चढ़ाती हूँ ! आपका बचन सत्य-सिद्ध हो

यही चाहती हूँ ।" इस प्रकार लजाते हुए शरतकुमारी ने शुभ-शकुन की गाँठ बाँधी ।

"आज कितने दिन हुए, शरत ?" आतुर हृदय से सुनन्दा ने पूछा ।

शर्माते हुए शरत ने कहा "दो महिने !"

"अरे, तो आज दो-दो महिने बीत जानेपर भी तु हमसे बात छिपाती है पगली ?" यों कहते हुए चन्दा ने उसके गालपर मीठी-सी चुटकी ली !

"जब आजतक मुझे ही कुछ पता नहीं था; तब कैसे, क्या कहती ?"

उस दिन से दुखियारे कुणाल के भवन में आनन्द की झलक-भी दिखाई देने लगी । सुनन्दा के दुःखित हृदय में भी शान्ति अनुभव हुई । उसने गर्भका भली-भाँति पोषण करने के लिए तथा खाने-पीने में सावधानी रखते हुए अधिक कामकाज न करने के लिए शरतकुमारी को समझाया ?

इसके बाद कुछ समय बीतनेपर शरतकुमारी को अच्छे और शुभ-सूचक स्वप्न दिखाई देने लगे । देव, गुरू और धर्मकी भक्ति करने का 'दोहद' उत्पन्न हुआ । कुणाल ने उसे परिपूर्ण किया । तभी से प्रसन्न चित्त रहती हुई शरतकुमारी गर्भका भली-भाँति पोषण करने लगी । सुनन्दा और चन्दा भी उसकी पूरी-पूरी सावधानी रखती थी । खाने-पीने की ओर पूरा ध्यान रखा जाता था । सभी दास-दासियाँ उसकी सेवा के लिए हर समय उपस्थित रहती थी । गर्भका पोषण करते हुए शरतकुमारी के हृदय में अनेक प्रकारकी अभिलाषाएँ उत्पन्न होने लगी । वह सबको अनेक प्रकारकी आज्ञा देकर उनपर शासन करने लगी । संसार को अपने आधीन बनाकर संसार में चक्रवर्ती राज्य-स्थापित करने की अभिलाषा उसके मनमें जागृत हो चली । इसप्रकार भली-भाँति गर्भका पालन करते हुए पूर्ण मास एवं शुभ मुहूर्त में एक सुन्दर और तेजस्वी बालक को उसने जन्म दिया । उस समय सभी ग्रह उसके अनुकूल थे । पत्रिका बनाने पर कई ग्रह उच्चके भी जान पड़े । कुछ स्वगृही भी थे । ऐसे उत्तम ग्रहयोगमें गूढ़ गर्भा शरतकुमारी ने तेजस्वी पुत्र को बिना किसी कष्ट के प्रसव किया ।

सुनन्दा, चन्दा आदि उस समय शरतकुमारी के पास हीं थी । निर्विघ्नता से पुत्रका जन्म हुआ देखकर उनको हार्दिक प्रसन्नता हुई । अशुचि आदि दूरकर उस बाल शिशु के चन्द्रमाको भी लज्जित करनेवाले सुन्दर मुख,

भव्यललाट, पुष्ट एवं सुगठित शरीर को देखकर सुनन्दा हर्षोन्मत्तसी हो गई। "बेटा ? तेरी माताका मनोरथ पूर्ण करना ! महान् चक्रवर्ती राजा बनना !" इसप्रकार उस बालकको देखते हुए हर्षाश्रु-युक्त सुनन्दा के मुखसे शुभाशीर्वाद निकल पड़ा ।

वह नवजात शिशु अपने कोमल हाथ उठाकर मुसकुराता, और उछलकर सबको आनन्दमग्न करने लगा । तुरन्त ही एक दासी ने दौड़ते हुए जाकर कुणाल को बधाई दी ।

पुत्र जन्मका समाचार सुनकर कुणाल प्रसन्न हुआ; किन्तु साथ ही उसके मन में यह भी विचार हुआ कि :- "मुझ जैसे के घर में जन्मधारण करने वाले इस पुत्र का क्या महद् भाग्य हो सकता है ? फिर भी जो कुछ दैवकी इच्छा होगी सो होगा ही !" बधाई देनेवाली दासी को अपनी शक्ति के अनुसार द्रव्य देकर उसने प्रसन्न किया ।

पुत्र-जन्म की बधाई से आज सारे घर में आनन्द ही आनन्द हो रहा था; किन्तु इस बात का किसे पता था कि, आज के आनन्द में भविष्य के उत्कर्षकी झाँकी भी छिपी हुई है !

क्रमशः

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English

1.	*Bhagavati-sütra* - Test edited with English translation by K.C. Lalwani in 4 volumes;		
	Vol-I (œatakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
	Vol-II (œatakas 3-6)		150.00
	Vol-III (œatakas 7-8)		150.00
	Vol-IV (œatakas 9-11)		150.00
2.	James Burges - *The Temples of Œatruñjaya,* Jain Bhawan, Calcutta, 1977, pp. x+82 with 45 plates	Price : Rs.	100.00
	[It is the glorification of the sacred mountain *Œatruñjaya.*]		
3.	P.C. Samsukha - *Essence of Jainism* translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	10.00
4.	Ganesh Lawani - *Thus Sayeth Our Lord*		10.00

Hindi

5.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn.) translated by Shrimati Rajkumari Begani	40.00
6.	Ganesh Lalwani - Œraman Samskriti ki Kavitä	20.00
7.	Ganesh Lalwani - Nílänjanä translated by Shrimati Rajkumari Begani	30.00
8.	Ganesh Lalwani - Candana-Mürti, translated by Shrimati Rajkumari Begani	50.00
9.	Ganesh Lalwani - Vardhamän Mahavír	60.00
10.	Ganesh Lalwani - Barsät kí Ek Rät	45.00
11.	Ganesh Lalwani - Pañcadaœí	100.00
12.	Rajkumari Begani - Yädó ke Äine më	30.00

Bengali

13.	Ganesh Lalwani - Atimukta	40.00
14.	Ganesh Lalwani - Œraman Samskrti Kavitä	20.00
15.	Puran Chand Shyamsukha - Bhagavän Mahävír O Jaina Dharma	15.00

तित्थयर

जिन धर्म और संस्कृति की महक से सुरभित करने वाली पत्रिका तित्थयर (मासिक) के आजीवन सदस्य बनें ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- एक हजार रूपये

JAIN JOURNAL

One of its Kind, most Valuable, Quaterly research Journal on Jainism

Life Membership – Rs. 2000/-
Yearly – Rs. 60/-

श्रमण

बंगाल की भूमि में जैन संस्कृति के गौरव का प्रतीक श्रमण (बंगला) के आजीवन सदस्य बनिये ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- पाँच सौ रूपये
वार्षिक शुल्क- तीस रूपये

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है ।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College
Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG Pvt. Ltd.

(Formerly : Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain- *Chairman*

A-42, Mayapuri, Phase-1, New Delhi - 110064
Phone : 5144496, 5131086, 5132203
Fax : 91-011-5131184
E-mail : laxman.jariwala@gems.vsni.net.in

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र धर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है ।

Dr. Jacobi

卐

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors

Regd. Office
2, Clive Ghat Street,, (N. C. Dutta Sarani)
6th Floor, Room No. 6, Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333, Telex : 21-7611 RAVI IN

Vizag Office
28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam - 530020, Phone : 69208/63276
Fax : 91-0891-569326, Gram : BOTHRA

N. K. JEWELLERS
Gold Jewellery & Silver Ware Dealers
2, Kali Krishna Tagore Street, Calcutta - 700 007

IN THE MEMORY OF LATE
Jitendra Singh Nahar, Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Phone : 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SPACE 'N' WINGS
Travel Agents
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 242-7806/8835/5852
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Phone : (O) 250623, (R) 239-6823

SANA FASHIONS
A20/21 Laghu Udyog
I.B. Patel Road, Goregaon East, Bombay - 400 063

H. R. ELECTRICALS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare parts
Siemens, English Electric L.T/ L.K. B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No - 712A
South Block, Calcutta - 700 001
Room No - 314, 3rd Floor
Phone : (O) 255009/1299, (R) 660-4332

VIJAY AJAY
9, India Exchange Place
Room No - 4/2, 4th Floor, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 220-6974/8591/7126, 243-4318
Fax : 220 6974

MAHASINGH RAJ MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

KASTURCHAND VIJAYCHAND
155, Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-7713

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Phone : Shop - 227-1857 (R) 238-0026

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Phone : 238-8677/1647, 239-6097

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL-H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Phone : 476-2994, 455-0137
Fax : 91-33-4552151

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Phone : 26-3028, 27-4039

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East, Calcutta - 700 069

S. VIJAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 238-1388, (R) 247-6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Calcutta - 700 007

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-4755, (R) 238-0817

KUMAR PAL BAHADUR SINGH DUGAR
2F, Garcha First Lane, Calcutta - 700 019
Phone : (O) 278841/7539, (R) 475-9712/2807

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 232-6040, (R) 684181

JAYSHREE EXPORTS
A Govt. of India Recognised Export House
105/4 Karaya Road, Calcutta - 700 017
Phone : 247-1810/1751, 240-6447
Fax : 91-33247-2897

MAHAVIR COKE INDUSTRIES (P) LTD.
1/1A Biplabi Anukul Chandra Street
Calcutta - 700 072, Ph : 215-1297, 26-4230/4240

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071, Ph : 282-4649, Resi : 247-2670

AAREN EXPORTERS
12A, Netaji Subhas Road, 1st Floor, Room No. 10
Calcutta - 700 001, Phone : 220-1370/3855

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Phone : 239-1408

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38, Armenian Street, 1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 25-7312, Shop : 230-1180, Resi : 241-6831

SIDDHA NIKETAN
Goldel Chance to book flat in Jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph : 282-2164/4577

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi : 464-2783

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta - 700 071, Ph: 296256/8730/1029
Resi : 2476526/6638/2405126
Telex : 021 2333, ARBI IN, Fax : 226-0174

G. M. SINGHVI
M/S. WILLARD INDIA LIMITED
Mcleod House
13, Netaji Subhas Road, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 248-7476-8, (R) 475-4851/1483
Fax : 248-8184

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box : 16127, Cal - 17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 240 0098, 247 1833

JAYANTI LAL & CO.
20, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Ph: 25-7927/3816/6734, Resi : 240-0440

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005
Ph: 29-5552/29-5955

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office :11, Clive Row, 3rd Floor, Room no. 14,
Cal -700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

HARAK CHAND NAHATA
21, Anand Lok, New Delhi - 110049
Ph : 646-1075

S.C. SUKHANI
Santiniketan.Building, 4th Floor, Room No. 14
8, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : (O) 242-0525 (R) 239-9548
Fax : 242-3818

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

A.C. LOCKS CO.
22 Bonfield Lane, Calcutta - 700 007

CHUNNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor
Calcutta - 700 007, Phone : 238-7764
Resi : 666-4541, 530-9286

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta - 700 007
Phone : 238-7015, 232-4087/4978

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

JAICHAND VINODKUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : 238-3328/9678, 239-3450
Resi : 247-6785/7086, 40-0325/3995
Fax : 239-3450, 247-7526
Telex : 217761 JVS-IN Gram MINNI-BROS

KUSUM CHANACHUR
Prop. Churoria Brothers
Mfg. by : K. C. C. Food Product
P.O. Ajimganj, Dist. : Murshidabad
Phone: STD (03483)-53234
Calcutta- 230-0432, 231-2802

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Phone: 2477450/5264

KALURAM RAMLAL
40A, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Phone : 238-9089/239-1264

MOTILAL BENGANI
CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Phone : 220-9255

A.M. BHANDIA & CO.
23/24 Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 242 1022/6456/555-4315 (R)

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Phone : 245-1612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

ABHAY SINGH SURANA
Surana House
3, Mango Lane, Calcutta - 700 001
Phone : 248-1398/7282

SATISH KUMAR SHYAMSUKHA
11, Pollock Street, Calcutta - 700 001

NARENDRA JAIN
Super Iron Factory
7, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 001
Phone : 225-3785/0069
Works : 665-3144
Fax : 91-33-2250198, 943333, 954321

ACARDIA SHIPPING LTD.
22, Tulsiani Chambers
Nariman Point, Bombay - 400 021

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Phone : 464-1186

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 220-1958/4110

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 230-0216, (R) : 259657, 259312

GRAPHIC PRINT & PACK
12C, Lord Sinha Road, Calcutta - 700 071
Phone : (O) 242-4916/8380
Resi : 343-8302, Pager : 6902-315070

Dr. ANJULA BINAYIKA
M.D. DND, M.R.C.O.G (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Phone : 474-8008

ABHANI BACHHRAJ
Fancy Saree Emporium
156, J.L. Bajaj Street, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 238-6582, 239-0079
Resi- 483988/2573

CHOPRA TYRES
Unit of Fatehchand Chopra & Family
Tyre Resoler
Sakunta Road, Agartala, (Tripura)

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Distributors of
J.K. Engineering Steel Files & Drills I.T. Cuttings, Tools
Miranda Tools & (Hacksaw Blades) BIPICO-ECLIPSE
18C, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : 242-2345/4461

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph : 238-7281, 230-1739

AKHILESH KUMAR JAIN
JUTE BROKER
9, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Phone : 221-4039, 210-2760, (R) : 660-1604

COMPUTER EXCHANGE
'Park Centre' 24 Park Street
Calcutta - 700 016, Phone : 295047, 299110

PARSAN BROTHERS
Diplomatic & Bonded Stores Suppliers
18-B, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : (O) 242-3870/4521, Fax : 242-8621

J. KUTHARI PVT. LTD.
12, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 220-3142, Resi : 475-0995, 476-1803
Fax : 221-4131

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-4730/6256/9867, Direct : 248-6477/6169
Resi : 478-0765/458-3397, Mobile : 98300-30618
Fax : 248-6169

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M.G. Road, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-9356/0950
(Fact) 557-1697/7059

DUGAR & CO. JUTE BROKER
12, India Exchange Place, (3rd Floor)
Calcutta - 700 001
Phone : 220-1283/0813, Resi : 555-6039

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : 242-5234/0329

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Phone : 953902/252759
Fax : 033-252902

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd.
Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-4779/0131/5721

SUNDERLAL DUGAR
R.D.B. Industries Ltd.
Regd. Off : Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-5146/6941/3350, Mobile : 9830032021
Office : Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph : 220-2389/3570/3569

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta -700068
Phone: 4720610

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane, Calcutta - 700 026
Phone : 476-1533

APARAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia
Howrah - 711 106, Phone : 665-3666/2272

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139, Resi : 244-0629/0319

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph : (O) 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Ph : 0151-522404, 25973
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151- 61256 (Bikaner)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph: (R) 455-3586

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Calcutta -700 007, Ph : (033) 230-1329, 232-1033
Fax: 91-33-2302413

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta - 700 020
Ph: 247-6874, Resi : 244-3810

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta -700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI, Fax : (033) 2209755
Resi : 464-3235/1541, Fax : (033) 4640547

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta - 700 073, Ph: (033) 262210

मथुरा के जैन स्तूप इस बात के
स्पष्ट और अकाट्य प्रमाण हैं कि
जैन धर्म प्राचीन है और
प्रारम्भ में भी वर्तमान स्वरूप में था ।

Shri Vinsent Smith

卐

RADHIKAS

ICE CREAM PARLOUR & FAST FOOD CENTRE

SHIVAM CHAMBERS
53, Syed Amir Ali Avenue
(Near Ice Scating Rink)
Calcutta - 700 019
Phone : 247-2602

THE PURE VEGETARIAN PARLOUR FOR CHOICEST & TASTIEST IDLIS, DOSAS, BURGERS, CHATS AND MANY MORE DELICIOUS FOODS WITH VARITIES OF ICE-CREAMS.

जैन संस्कृति मनुष्य संस्कृति है,
जैन दर्शन भी मनुष्य दर्शन ही है,
जिन देवता नहीं थे, किन्तु मनुष्य थे ।

Prof. Harisatya Bhattacharya

We are, always ready to most the Exact type of your requirement

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

'KANKARIA ESTATE'

6, Little Russel Street
Calcutta - 700 001

A Recognised Export House
Cable : SWANAUCK, CALCUTTA
Telex : 21-2396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone : 29-2621, 2623, 7199, 7698, 7710

Registered Office &
'JUTE MILL'
At Jagatdal, 24 Parganas
Phone : BHATPARA 2757, 2758 & 2038

एतिहासिक सामग्री से यह सिद्ध होता है कि आप से पांच हजार वर्ष पहले भी जैन धर्म की सत्ता थी ।

Dr. Prannath (Historian)

GYANI RAM HARAKH CHAND SARAOGI CHARITABLE TRUST

P-8, Kalakar Street
Calcutta - 700 007
Phone : 239-6205/9727

Founders of

Shri Gyaniram Harakchand Saraogi College of Arts & Commerse
Sujangarh

Shri Gyaniram Saraogi Homeo Hall

Shri Gyaniram Saraogi Physiotherapy Centre

भागवत पुराण के अनुसार

ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं।

Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta - 700 017
Telegram : 'Hindogen' Calcutta
Phone : (033) 242-8399/8330/5443
Fax : (91) 33 2424998/4280

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
IronOre and Manganese Ore Mines
In Orissa

S. G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)

Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)

High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore

H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता है। ज्ञान के बिना चरित्र के गुण नहीं होते। गुणों के बिना भक्ति नहीं होती और भक्ति बिना निर्वाण शाश्वत् आत्मानन्द प्राप्त नहीं होता।

G.C. Jain

A-40 N.D.S.E - II
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/NC - 330

VOL XXII No. 6

'Titth ayara'

Registered with the registered
of Newspapers for India under
No. R.N. 3018/77

September 1998

अरिहंते सरणं पवज्जामि
सिद्धे सरणं पवज्जामि
साहु सरणं पवज्जामि
केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि

"आत्मा के साथ ही युद्ध करो, बाहरी दुश्मनों
के साथ युद्ध करने से क्या लाभ? आत्मा को आत्मा
के द्वारा ही जीत कर मनुष्य सच्चा सुख पा सकता है।"

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225